अत्यावश्यक है।

सामूहिक परामर्श के आधार
(BASES OF GROUP COUNSELLING)

सामूहिक परामर्श के कुछ मुख्य ऐसे आधार हैं जिनकी तरफ ध्यान देना अति आवश्यक है। ये आधार निम्नलिखित प्रकार से हैं–

(1) व्यक्ति द्वारा अपनी क्षमताओं तथा सीमाओं का ज्ञान।

(2) अपनी सम्भावना की पूर्ति।

(3) वैयक्तिक भिन्नताओं का प्रभाव।

(4) विकासात्मक प्रक्रिया में सामूहिक अनुभव।

(5) व्यक्ति के प्रत्यक्ष ज्ञान एवं स्व-सम्प्रत्यय में समूह के कारण होने वाले परिवर्तन।

उपर्युक्त प्रस्तुत किये गये आधारों का अब हम विस्तार से अध्ययन करेंगे–

(1) **व्यक्ति द्वारा अपनी क्षमताओं तथा सीमाओं का ज्ञान**–सामूहिक आधार का पहला आधार यह है कि व्यक्ति को अपनी योग्यताओं या क्षमताओं एवं सीमाओं का ज्ञान होना चाहिए। यर्थाथता तो यह है कि अनेक

लोगों को या तो अपनी क्षमताओं का ज्ञान ही नहीं होता है या तो वे स्वयं की क्षमताओं को जानना ही नहीं चाहते हैं या फिर उनके सम्बन्ध में बहुत कम जानते हैं या उन्हें इसकी वास्तविकता का अनुमान अवास्तविक लगता है। इस कारण व्यक्ति सामूहिक जीवन के अनुभवों से लाभ नहीं उठा पाता है। सामूहिक परामर्श व्यक्ति को इस योग्य बनाता है कि वह अपनी यथार्थ क्षमताओं को अन्य लोगों के सम्बन्ध में समझ पाये तथा उसके भीतर जो भी कमियाँ हैं उन्हें वह अलग कर सके। अत: सामूहिक परामर्श के रूप आधार के अन्तर्गत व्यक्ति अपनी क्षमताओं तथा सीमाओं का ज्ञान स्वयं कर सकता है।

(2) **अपनी सम्भावनाओं की पूर्ति**—सामूहिक परामर्श का दूसरा आधार व्यक्ति के माध्यम से अपनी सम्भावनाओं की पूर्ति करना है। इस कार्य में भी सामूहिक परामर्श की आवश्यकता होती है। व्यक्ति की जो अदृश्य शक्तियाँ हैं उनकी उत्पत्ति की जो सम्भावनाएँ हैं, इन सबके सम्बन्ध में ज्ञान समूह में कार्य करते समय व्यक्ति को अच्छी प्रकार से होता है। केवल इतना ही नहीं वह स्वयं की सम्भावनाओं के अनुरूप कार्य करके उन्नति प्राप्त करता है। इस विचार से सामूहिक परामर्श का महत्व अत्यधिक है। अत: सामूहिक परामर्श में व्यक्ति अपनी सम्भावनाओं के अनुसार सफलता प्राप्त करता है।

(3) **वैयक्तिक भिन्नताओं का प्रभाव**—हम जब सामूहिक परामर्श के सम्बन्ध में बात करते हैं तो इसका तात्पर्य यह कदापि नहीं है कि व्यक्ति या वैयक्तिक भिन्नता का कोई स्थान सामूहिक परामर्श के अन्तर्गत नहीं है। समूह के अन्तर्गत रहते हुए हर एक व्यक्ति अपनी विशिष्ट प्रवृत्तियों के अनुरूप काम कर सकते हैं। सामूहिक परामर्श लाभदायक नहीं होता है। जो कि वैयक्तिक भिन्नताओं को दृष्टि में रखकर दिया जाता है। अभिप्राय यह है कि जहाँ एक तरफ किसी समूह के लोगों की कठिनाइयों में अत्यधिक समानता हो सकती है। वहाँ इसी के साथ वैयक्तिक भिन्नताएँ भी प्राप्त होती हैं। अत: वही परामर्शदाता सामूहिक परामर्श में सफल हो सकता है। जो वैयक्तिक भिन्नताओं को दृष्टि में रखते हुए सामूहिक परामर्श की व्यवस्था करता है।

(4) **विकासात्मक प्रक्रिया में सामूहिक अनुभव**—प्राणी है इस बात को हम सब जानते हैं। सामाजिक परिवेश में उसका विकास समुचित रूप से होता है। समाज अथवा समूह में वह ऐसे सम्बन्धों को उत्पन्न करता है जो उसके सर्वांगीण विकास में सहयोग प्रदान करते हैं। यही कारण है कि नई शिक्षा के अन्तर्गत परिवेश में बदलाव करके अथवा जरूरत के अनुसार उसे अनुकूल बनाकर शिक्षा की व्यवस्था की जाती है। अभिप्राय यह है कि जब व्यक्ति की वांछनीय अनुभूति सामूहिक जीवन में प्राप्त होती है। तब उसका विकास तुष्टिपूर्ण विधि से होता है। यह कभी भी सम्भव नहीं हो सकता है कि कोई भी व्यक्ति अकेले रहकर अपना विकास कर सकता है। अत: सामूहिक परामर्श के विकासात्मक प्रक्रिया में सामूहिक अनुभव के अन्तर्गत व्यक्ति सामूहिक जीवन का अनुभव करता है तथा वह इसके अभाव में अपना स्वयं विकास नहीं कर सकता है।

(5) **व्यक्ति के प्रत्यक्ष ज्ञान एवं स्व-सम्प्रत्यय में समूह के कारण होने वाले परिवर्तन**—सामूहिक परामर्श का मुख्य आधार यह है कि मानव को ऐसी अनुभूति प्रदान की जाए कि वह अपने सम्बन्ध में उचित धारा उत्पन्न कर सके। उसका स्व-सम्प्रत्यय (Self-concept) सामूहिक जीवन से प्रेरित हो तथा उसके परिणामस्वरूप मानव जीवन में सहयोग और सामाजिक आदान-प्रदान के महत्व को जानता हो। अगर व्यक्ति सामाजिक जीवन में हिस्सा नहीं लेता है। तो उसका विकास एकल ही होता है। वह अपने आस-पास चीजों और लोगों के प्रति ऐसी विचारधाराएँ बनाता है जो कि दोषपूर्ण हो सकती हैं। इसलिए सामूहिक परामर्श के माध्यम से इस विचार को जानने का प्रयत्न किया जाता है कि मानव अपने आस-पास के परिवेश के प्रति उचित धारणा रखें तथा साथ-ही-साथ अपने सम्बन्ध में भी उसकी धारणा उचित हो। अत: सामूहिक परामर्श का यह आधार व्यक्ति को स्वयं का प्रत्यक्ष ज्ञान एवं स्व-सम्प्रत्यय में समूह के कारण उपस्थित होने वाले परिवर्तन के महत्व को स्पष्ट करता है तथा व्यक्ति को अपने विषय में उचित धारणा बनाने के लिए प्रेरित करता है।

इस प्रकार से सामूहिक परामर्श के ये आधार व्यक्ति को अपनी योग्यताओं तथा सीमाओं का बोध कराते हैं तथा उनकी सम्भावनाओं को पूर्णत: प्रदान करते हैं ताकि व्यक्ति अपनी योग्यता व सम्भावनाओं के आधार पर अपना विकास कर सके। इसके अतिरिक्त सामूहिक परामर्श में वैयक्तिक भिन्नता के लिए कोई स्थान नहीं है तथा विकासात्मक प्रक्रिया में व्यक्ति समाज में रहकर विकास करता है चूँकि समाज के अभाव में व्यक्ति अपना विकास स्वयं अकेले नहीं कर सकता है और अन्तिम आधार के फलस्वरूप व्यक्ति अपना प्रत्यक्ष ज्ञान कर सकता है। वह